पिंकी अरमोली

बेटी हूं मैं अब जुल्म नहीं सहूंगी।
बहुत सह लिया है अत्याचार मैंने।
अब फैसला खुद करूंगी।।
चुप बैठी थी मैं सदियो से।
अब चिल्ला चिल्ला कर बोलूंगी।
बेटी हूं मैं अब जुल्म नहीं
सहूंगी।।
अब नहीं सहना है दर्द मुझे।
अब इस अत्याचार से आजादी पाना है।।
क्या कसूर था मेरा?
जो मुझपर ज़ुल्मों की बरसात होती है।।
चुप बैठी थी मैं सदियो से।
अब चिल्ला चिल्ला कर बोलूंगी।
बेटी हूं मैं अब जुल्म नहीं सहूंगी।।
पैदा होते ही मुझे।
पराए घर का समझ लिया।
कौन जाने ये दर्द मेरा।
जो सिर्फ मैंने सहा है।
चुप बैठी थी मैं सदियो से।
अब चिल्ला चिल्ला कर बोलूंगी।
बेटी हूं मैं अब जुल्म नहीं सहूंगी।।
जब भी बात करने की सोचती थी मैं।
तब तब बेटी होने का अहसास कराते थे।
कभी कभी कहते थे लड़की हो तुम।
कभी कहते थे बोलो कम।
चुप बैठी थी मैं सदियो से।
अब चिल्ला चिल्ला कर बोलूंगी।।
बेटी हूं मैं अब जुल्म नहीं सहूंगी।।

(--- गरुड़, बागेश्वर)

चरखा फीचर

क्यो करते हो नशा ?

— दीक्षा

क्यों करते हो नशा ?
नशा है खराब बहुत।
क्यों नहीं छोड़ देते हो
तुम।
बीड़ी, सिगरेट और शराब।।
करता है यह आंतो को खराब।
यह तुम्हारी जिंदगी को।
कर देती है पूरा बर्बाद।
पीते वक्त क्यों नहीं करते हो।
घर वालों को तुम याद।।
कितना सताते को उन्हें तुम पीकर।
इतना दुख होता है उन्हें।
सोचते हैं फिर क्या करे जीकर।
लेकिन तुम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
याद सिर्फ रहता है सेवन करना है नशे
का।।

(कन्यालीकोट, कपकोट
बागेश्वर, उत्तराखंड)

चरखा फीचर